International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 7, July 2017,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

दुष्यंत कुमार की गजलों में प्रतिरोध के स्वर

डॉ. स्मिता जैन, एसोसिएट प्रोफेसर,
स्नातकोत्तर हिंदी विभाग, एच.डी. जैन कॉलेज, आरा

कविता का सहज स्वभाव है प्रतिरोध। प्रतिरोध सहमति नहीं, असहमति का स्वर है। जब कवि वाह्य यथार्थ और आंतरिक यथार्थ को देखता है तो एक द्वंद्व की स्थिति उत्पन्न होती है। इसी द्वंद्व में कवि किसी एक स्थिति को स्वीकार करता है और दूसरी को नकारता है। यहीं से प्रतिरोध की शुरुआत होती है। जिस समाज में, वातावरण में हम रहते हैं, अगर वह हमारे अनुरूप अथवा अनुकूल नहीं होता है, तब एक आक्रोश उभरता है। यही आक्रोश कविता में विरोध का स्वर बनकर फूटता है। लेकिन स्फोट के इन स्वरों में एक अपूर्व स्पंदन, एक अद्भुत झनझनाहट, एक अजीब–सी कुलबुलाहट होती है।

व्यंग्य भी एक प्रकार का प्रतिरोध है। व्यंग्य में प्रतिरोध की धार और भी पैनी हो जाती है। व्यक्ति और समाज की विसंगतियों पर चुपके से व्यंग्य करना हिंदी गजल का अपना मिजाज रहा है। हिंदी में गजलों को चर्चित कराने में दुष्यंत कुमार के अवदान को भुलाया नहीं जा सकता। आम आदमी की पीड़ा, उत्पीड़न, व्यथा को उन्होंने गजलों के माध्यम से अभिव्यक्ति दी। न केवल सामाजिक बल्कि अपने अंतस् की वेदना को भी पूरी ईमानदारी और एकनिष्ठा के साथ व्यापक पाठक वर्ग तक पहुँचाने के लिए गजल को माध्यम बनाया। अपने भीतर की बेचैनी एवं आक्रोश को गजलों के माध्यम से जनसामान्य तक पहुँचाने वाला यह शायर 'हिंदी के एक बागी शायर' के रूप में याद किया जाता रहा है। महान् शायर गालिब की भाँति दुष्यंत कुमार ने अपने और समाज के दर्द को जिस संवेदना के साथ प्रस्तुत किया है, वह अपने–आप में अद्भुत है, अनूठा है।

दुष्यंत कुमार से गजल में प्रतिरोध चेतना की शुरुआत होती है। राजनीतिक सत्ता, व्यवस्था का विरोध, तथ्कालीन राजनीति चरित्र, आर्थिक विषमता, पूँजीगत शोषण, मानव मूल्यों की विघटनकारी प्रवृत्ति, अमानवीय एवं असंवेदनशीनल व्यवहार पर उन्होंने जमकर प्रहार किए हैं। निरंतर क्रूर और अमानवीय होती जा रही व्यवस्था पर कवि की यह घोषणा कि–

पक गई हैं आदतें, बातों से सर होंगी नहीं,
कोई हंगामा करो, ऐसे गुजर होगी नहीं।

विरोध का प्रखर स्वर है।

आज चतुर्दिक अराजकता का माहौल है। व्यवस्था का संपूर्ण ढाँचा मानो चरमरा गया है। लूटपाट, धोखाधड़ी, खून–खराबा, धार्मिक उन्माद आदि अनैतिक मूल्यों की बाढ़–सी आयी है। ऐसे में एक संवेदनशील और ईमानदार रचनाकार की बेचैनी बढ़ जाती है। वह छटपटा उठता है। इस तरह के विषाक्त वातावरण में साँस लेना भी कठिन हो जाता है। छटपटाहट जब हद से गुजरती है, तब वे विद्रोह की आग उगलने लगते हैं–

यहाँ दरख्तों के साये में धूप लगती है,

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 7, July 2017,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

चलो यहाँ से चलें और उम्र भर के लिए।
ये मुतमइन है कि पत्थर पिघल नहीं सकता,
मैं बेकरार हूँ आवाज में असर के लिए।

दुष्यंत कुमार की सामाजिक चेतना आरंभ से ही बहुत प्रखर रही है और 'साये में धूप' तक आते–आते उनके व्यंग्य की धार बहुत पैनी हो चुकी है। दैन्य, उत्पीड़न, शोषण, पराजय और दुर्व्यवस्था की निर्भीक अभिव्यक्ति उनकी गजलों में है। सामाजिक वैषम्य उन्हें गहरे तक कुरेदते हैं, भीतर तक चीर देते हैं, एक गहरा जख्म देते हैं। आजादी को लेकर जो सपने पाले गये थे, उन सपनों को चकनाचूर होते देख कवि का हृदय भी मानो टूक–टूक हो उठता है। स्वतंत्रता के बाद के यथार्थ की ओर इंगित करते हुए कवि एक तरफ तो सपने बुनता है तो दूसरी तरफ मोहभंग को यथार्थता से क्षुब्ध हो उठता है–

कहाँ तो तय था चिरागां हरेक घर के लिए,
कहाँ चिराग मयस्सर नहीं शहर के लिए।

आम आदमी और सियासत के बीच की दूरी को लक्ष्य करते हुए बेबाक शब्दों में राजनीतिक विसंगतियों का खाका खींच जाते हैं–

मस्कहत आमेज होते हैं सियासत के कदम,
तू न समझेगा, तू अभी इंसान है।
कल नुमाइश में मिला था, वो चिथड़े पहने हुए,
मैंने पूछा नाम तो बोला कि हिन्दुस्तान है।

व्यवस्था के दोगलेपन के विरुद्ध उनकी जुबान आक्रामक हो उठती है–

भूख है तो सब्रकर, रोटी नहीं तो क्या हुआ,
आजकल दिल्ली में है, जेरे बहस ये मुद्दआ।
गिड़गिड़ाने का यहाँ कोई असर होता नहीं,
पेट भरकर गालियाँ दो, आह भरकर बद्दुआ।

दुष्यंत ऐसी अमानवीय और पतित व्यवस्था का विरोध वैयक्तिक धरातल पर नहीं करते अपितु समाज की मुख्यधारा से जुड़कर वे जनता जनार्दन से सत्ता परिवर्तन की अपील करते हैं। बिना किसी लगा–लपेट और निर्भीक मानसिकता के साथ समाज एवं सरकार की गलत व्यवस्था पर व्यंग्य करते हुए परिवर्तन हेतु क्रांति का बिगुल बजाते हैं–

अब तो इस तालाब का पानी बदल दो,
ये कँवल के फूल कुम्हलाने लगे हैं।

गलत और भ्रष्ट व्यवस्था के विरोधी दुष्यंत राजनीति में एक क्रांतिकारी परिवर्तन लाना चाहते हैं। व्यक्ति, समाज तथा देश की विसंगतियों एवं विद्रूपताओं पर व्यंग्य के माध्यम से करारा प्रहार करते हुए वे लोगों को दिशाबोध देने के उपक्रम में लग जाते हैं–

एक चिनगारी कहीं से ढूँढ़ लाओ दोस्तो,
इस दीये में तेल से भीगी हुई बाती तो है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 7, July 2017,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

पौरुष की सार्थकता तो संघर्ष में ही है। भ्रष्ट–व्यवस्था को उखाड़ फेंकने में उनका विश्वास है–

सिर्फ हंगामा खड़ा करना मेरा मकसद नहीं,
मेरी कोशिश है कि ये सूरत बदलनी चाहिए।
मेरे सीने में नहीं तो तेरे सीने में सहो,
हो कहीं भी आग लेकिन आग जलनी चाहिए।

दुष्यंत कुमार की गजलों में प्रतिरोध का यह स्वर बार–बार उभरता है। आशा–निराशा, जिजीविषा, संघर्ष, विश्वास और प्रतिरोध सब कुछ उनकी गजलों में है। कवि को पूरा विश्वास है कि आज नहीं तो कल, यह संकट का दौर खत्म हो जाएगा। उनके व्यंग्य का यह एक सृजनात्मक पहलू है, जिसके अंतर्गत प्रेम और सहानुभूतिपूर्ण वातावरण निर्माण की भावना है–

इस नदी की धार में ठडी हवा आती तो है,
नाव जर्जर ही सही, लहरों से टकराती तो है।
एक चादर साँझ ने सारे नगर पर डाल दी,
यह अंधेरी की सड़क उस ओर तक जाती तो है।

सच तो यह है दुष्यंत कुमार एक संवेदनशील कवि एवं गजलकार हैं। मानवता के प्रति प्रतिबद्ध हैं और उनकी यही प्रतिब(ता गजलों में अभिव्यक्ति पाती रही है। उनकी गजलें मुखर हैं, वाचाल हैं और मानवाधिकार की जवाबदेहियों को लेकर बहुत सजग हैं–

मुझमें रहते हैं करोड़ों लोग चुप कैसे रहूँ,
हर गजल अब सल्तनत के नाम एक बयान है।